IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

Bharat Ki Aazadi Me Mahilaon Ki Bhumika Ka Mulyankan

डॉ. राज कुमार मंडल
इतिहास विभाग
ललित नारायण मिथिला
विश्वविधालय,दरभंगा

भूमिका

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं का योगदान कब और कैसा रहा यह एक महत्वपूर्ण विषय है। भारत की धरती संघर्षो की धरती रही है। जहां के सभी लोग अपनी मातृभूमि की रक्षा की लिए सबसे आगे रहते हैं। भारत की आजादी में महिलाओं की भूमिका का अपना इतिहास रहा है। महिलाओं ने हर क्षेत्र में आगे आ कर भूमिका निभाई है। हमारी स्वतंत्रता की लड़ाई का इतिहास सन् 1857 से 1942 ई. तक 85 वर्षो का इतिहास है। भारत की आजादी के संघर्ष में पुरूषो और महिलाओं ने समान रूप से भाग लिया। भारतीय महिलाओं का योगदान इसमें इस लिए भी महत्वपूर्ण हो जाता है कि उनका सामाजिक उत्थान हुए बहुत लंबा समय व्यतीत नहीं हुआ था। घर का मोर्चा हो या राजनीति का रणक्षेत्र, महिलाओं ने जिस साहस, सहिष्णुता और वीरता से स्वतंत्रता आंदोलन में अपनी भूमिका निभाई वह इतिहास की धरोहर है। सन् 1857 ई. का विद्रोह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का पहला ऐसा विस्फोट था, जिसकी नायक एक महिला थी, जिसने अदभुत वीरता, पराक्रम और दिलेरी का परिचय दिया । उसके लिए स्वयं अंग्रेज षासक भी प्रषंसा किये बगैर नहीं रह सके । सर हूरोज को झांसी की रानी लक्ष्मीबाई के अदभुत पराक्रम से चकित होकर कहना पड़ा कि सैनिक विद्रोह के नेताओं में महारानी लक्ष्मीबाई सर्वाधिक बहादुर और सर्वश्रेष्ठ थी। रामगढ़ की रानी ने जहां रणक्षेत्र में लड़ते–लड़ते प्राण दे दिये वहीं बेगम हजरत महल अंग्रेजो के समक्ष आत्म समर्पण कर अपमानित होने के बजाए नेपाल की ओर चल पड़ी, जहां बनवास में उनकी मृत्यु हुई और जीनत महल को बर्मा में निर्वासित कैदी के रूप में जीवन व्यतीत करना पड़ा।

कुंजीशब्दः– आंदोलन, संघर्ष, महिला, बिहार, योगदान, भूमिका

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की 1885 ई. में स्थापना के बाद जैसे–जैसे कांग्रेस संगठित रूप से व्यवस्थित एवं व्यापक होता गया, भारत में समाज या धर्म सुधार आंदोलन भी व्यवस्थित होता गया। महिला चिंतन इस सभी सुधार आंदोलन का हिस्सा था, किंतु स्वयं महिलाए इसके संगठन एवं नेतृत्व में गौण थी।

इसकी स्थापना के कुछ वर्षों के बाद कांग्रेस के वार्षिक अधिवेषनों में महिलाए प्रतिनिधि के रूप में भाग लेने के लिए आने लगी । 1890 ई. के कलकत्ता अधिवेषन में स्वर्ण कुमारी देवी और श्रीमती कादम्बिनी गांगुली के प्रयास से लगभग 100 महिलाओं ने भाग लिया। श्रीमती गांगुली प्रथम महिला थी जिन्होंने राष्ट्रीय कांग्रेस के मंच से अपना पहला भाषण दिया। यह सम्भवतया भारतीय महिलाओं के राष्ट्रीय आंदोलन में प्रवेष का षुभारम्भ था और इसके बाद तो मातृभूमि की खातिर राजनैतिक गतिविधियों में भाग लेने वाली महिलाओं की संख्या लगातार बढ़ती ही चली गयी।

इन महिलाओं को उत्साहित कर एवं उन्हें संगठित कर एक लक्ष्य दिया महात्मा गांधी ने। 1920 में असहयोग आन्दोलन चलाकर उन्होंने महिलाओं को न केवल एक उद्धेष्य दिया अपितु उन्हें एक नयी दिषा भी दी। जब 1930 ई. में गांधी जी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन चलाया, तो बड़ी संख्या में महिलाओं ने सत्याग्रह में भाग लेकर अपनी षक्ति का परिचय दिया । विषेष रूप से पटना में विदेषी वस्तुओं के बहिष्कार को सफल बनाने का श्रय बिहार की राष्ट्रवादी महिलाओं को जाता है। श्रीमती हसन इमाम, श्रीमती विंध्यवासिनी देवी, श्रीमती सी.सी.दास आदि के नेतृत्व में महिलाओं ने नगर की सड़को पर जुलूस निकालकर विदेषी वस्तुओं के बहिष्कार को प्रचालित किया और व्यापारियों के घरो में जा कर विदेषी वस्तुओं के व्यापार न करने का आग्रह किया। महिलाओं ने षराब की दूकानों पर भी सफलतापूर्वक धरना दिया। राष्ट्रवादी महिलाओं की सक्रियता का आलम यह था कि प्रांतीय सरकार को महिला पुलिस की बहाली करनी पड़ी। श्रीमती हसन इमाम, श्रीमती सी.सी. दास विंध्यवासिनी देवी आदि के विरूद्ध कानूनी कारवाई भी की गई। विदेषी वस्त्र बहिष्कार

और षराबबंदी आंदोलन के सिलसिले में हजारीबाग से सरस्वती देवी एवं साधना देवी, गिरीडीह से मीरा देवी और लखीसराय से श्रीमती विधावती देवी को गिरफ्तार किया गया। स्वदेषी प्रचार के पक्ष में वातावरण बनाने के लिये विदेषी वस्त्रों की होली जलाई जाने लगी। षराब की दुकानों पर धरना दे कर उन्हें बंद कराया जाने लगा। उसी तरह 1942 ई. के भारत छोड़ो आंदोलन में तो हजारों की संख्या में महिलाऐ घरो से बाहर निकल आई। उन्होंने तन–मन से इस आंदोलन में सहयोग दिया। संगठित रूप से कर्तव्य के प्रति समर्पित होकर और अनेक यातनाओं को सहते हुए उस समय राजतीतिक गतिविधियों की बागडोर सम्भाली जब अधिकांष राष्ट्रीय नेताओं को ब्रिटिष सरकार ने पकड़कर रखा था। उस समय राष्ट्रीय स्तर पर श्रीमती सरोजिनी नायडू , अरूणा आसिफ अली, विजय लक्ष्मी पंडित श्रीमती सुचेता कृपलानी, कमला देवी चटोपाध्याय, कस्तुरबा गांधी, मुत्तुलक्ष्मी रेड्डी, ऐनी बेसेंट, हन्सा मेहता तथा राजकुमारी अमृता कौर जैसी अनेक महिलाओं के योगदान को इतिहास कभी नहीं भूलेगा।

राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी को तीन प्रमुख स्तरों पर इंगित किया जा सकता है। प्रथमः– वे सामान्य महिलायें जिन्होंने सत्याग्रह में हिस्सा लिया, किन्तु जो किसी भी राजनीतिक अथवा सामाजिक संगठन से औपचारिक रूप से संबंधित नहीं थी। द्वितीयः– वे महिलायें जो गांधीवादी राजनीति से प्रभावित होकर समाज सुधार के उद्देष्य से सक्रिय हुई, किन्तु इनकी भागीदारी कार्य एवं क्षेत्र की दृष्टि से सीमित थी। तृतीयः–वे कुलीन महिलायें जिनके परिवार राष्ट्रीय आंदोलन से प्रतिबद्ध थे एवं इसके कारण ऐसी महिलाओं का सार्वजनिक राजनीति में प्रवेष तथा भूमिका सरल एवं स्वाभाविक मानी गयी । भारत में महिला स्वतंत्रता आंदोलन राष्ट्रीय आंदोलन की राजनीतिक का महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है।

महिला मुद्दों का राष्ट्रीय आंदोलन में समावेष होने से कांग्रेस के कई नेताओं को समान अधिकार मिलने के विषय पर जागरूकता पैदा करने में मदद की। सार्वजनिक जीवन में कार्य करने से महिलाओं को एक नया आत्मविष्वास प्राप्त हुआ।

1920 ई. में असहयोग आंदोलन चला जिससे महिलाओं को एक नई दिषा मिली। 1930 ई. में गांधी जी के रचनात्मक कार्यक्रम सविनय अवज्ञा आंदोलन तथा भारत छोड़ो आंदोलन में भी महिलाओं ने तन–मन–धन से पूर्ण सहयोग दिया। तथा अनेक यातनाओं को सहते हुए उस समय राजनीतिक आंदोलन की बागडोर संभाली जब हजारों राष्ट्रीय नेताओं को ब्रिटिष सरकार ने कारावास में बंद कर रखा था। जिस समय सम्पूर्ण राष्ट्र स्वतंत्रता आंदोलन के प्रवाह में बह रहा था, बिहार उससे कैसे अछूता रहता? इस क्षेत्र की महिलाओं ने भी राजनैतिक आंदोलन में अपना सक्रिय योगदान दिया। राष्ट्रीय आंदोलन के समय इन महिलाओं ने खादी का प्रचार, विदेषी वस्त्रों की होली जलाना, मद्द निषेध, षराब की दुकानों पर धरना देना तथा पिकेटिंग करना आदि कार्यो में भाग लिया।

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि स्वाधीनता आंदोलन के साथ–साथ नेताओं ने महिला उत्थान की दिषा में अपना योगदान दिया। उनके प्रयत्नों से महिलाओं में षिक्षा के विकास के साथ–साथ जागृति

आती गई तथा घर की चारदीवारी से बाहर निकलकर उन्होंने राजनैतिक, सामाजिक तथा सार्वजनिक गतिविधियों में भाग लेना प्रारंभ किया । ब्रिटिष सरकार ने भी महिलाओं की स्थिति में सुधार लाने के लिए अनेक कानून बनाए। परिणाम स्वरूप धीरे–धीरे समाज में महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन आना प्रारंभ हुआ जो राष्ट्रीय आंदोलन के समय व्यापक रूप से दिखाई पड़ा।

1920 ई. गांधी जी के सम्पर्क में आने के पष्चात तथा उनके नेतृत्व में चले राष्ट्रीय आंदोलन के फलस्वरूप बिहार में महिला सषक्तिकरण मूर्त रूप लेने लगा। इस प्रकार महिला सषक्तिकरण की दिषा में आधुनिक काल में हुए सामाजिक परिवर्तनों की प्रमुख भूमिका रही।

कनकलता बरूआ:– असम के सोलतपुर जिले के गोहपुर की रहने वाली थीं। भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान उनकी आयु मात्र 18 वर्ष की थी। स्थानीय लोग उन्हें 'बीरबाला' के नाम से जानते हैं।

20 सितंबर, 1942 को भारी संख्या में लोग गोहपुर पुलिस चौकी पर षांतिपूर्ण तरीके से प्रदर्षन करने के लिये पहुँच रहे थे। उनका उद्देष्य पुलिस चौकी पर लगे यूनियन जैक को उतार कर भारतीय झंडा फहराना था। कनकलता महिलाओं के समूह का प्रतिनिधित्व कर रही थी। थाने के दरोगा के धमकी देने पर भी वो नहीं मानी और झंडा लेकर आगे बढ़ती रहीं। आखिरकार वो पुलिस की गोली का षिकार हुई और षहीद हो गई। वर्ष 1930 के चटगॉव षस्त्रागार लूट में वो सूर्य सेन ;मास्टर दाद्ध के साथ भाग लेना तथा वर्ष 1932 में उन्हें आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई थी । वर्ष 1935 के भारत षासन अधिनियम के बाद राज्यों स्वायतता दी गई। जिसके बाद भारतीय नेताओं रबींद्रनाथ टैगोर, सी.एफ. एंड्रूज तथा महात्मा गांधी ने उनको जेल से छुड़ाने में मदद की तथा वर्ष 1939 में वो जेल से रिहा हुईं।

जेल से बाहर आने के बाद उन्होंने अपनी आगे की पढ़ाई पूरी की तथा बंगाल के धोबीपाड़ा में मजदूरों के हक में कार्य करती रही। वे बाद में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी से जुड़ गई तथा ब्ब्ड के नेता पी.सी. घोष से उन्होंने विवाह किया। द्वितीय विष्व युद्धके दौरान सरकार ने उनके बाहर निकलने पर प्रतिबंध लगा दिया था तथा 24 घटों के अन्दर गिरफ्तार करने का आदेष दिया। लेकिन वो भूमिगत तरीके से पार्टी तथा आजादी के लिये लगातार कार्य करती रहीं।

राजकुमारीः– ने भारत छोड़ो आंदोलन में मत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। वो पंजाब के कपूरथला राजघराने से संबंधित थीं तथा लंदन से पढ़ाई करने के बाद वो भारत लौटीं। वो गांधीजी के विचारो से काफी प्रभावित थीं तथा नमक सत्याग्रह में भी उन्होने अपने योगदान दिया था। उनका मुख्य कार्यक्षेत्र षिक्षा के माध्यम से महिलाओं तथा हरिजन समाज को सषक्त बनाना था। वह अखिल भारतीय ग्रामोधोग संगठन की अध्यक्ष भी रहीं थीं।

भारत छोड़ो आंदोलन में वो लोगों के साथ मिलकर जुलूस निकालती और विरोध प्रदर्षन करती थीं। षिमला में 9 से 16 अगस्त के बीच उन्होंने प्रतिदिन जुलूस निकाला तथा पुलिस ने उनपर 15 बार लगातार निर्दयता से लाठीचार्ज किया था। अंततः सरकार ने उन्हें बाहर छोड़ना उचित नहीं समझा तथा

कलकता में उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। इसके अलावा राजकुमारी वर्ष 1932 में अखिल भारतीय महिला सभा की स्थापना में मुख्य भूमिका निभाई। उन्होंने वर्ष 1932 में मताधिकारों के लिये बनी लाथियन समिति के विराध में आवाज उठाई तथा सार्वभौम वयस्क मताधिकार की मांग की।

अनुसूयाबाईः— काले महाराष्ट्र की थीं परंतु इनका मुख्य कार्यक्षेत्र मध्यप्रदेष था। वर्ष 1920 में उन्होंने महिलाओं का एक संगठन भागिनी मंडल की स्थापना की। इसके अलावा वो अखिल भारतीय महिला सभा की सक्रिय सदस्य रहीं। वर्ष 1928 में अनुसूयाबाई केंद्रीय प्रांत विधानमंडल की सदस्य नियुक्त हुई तथा इसके उपाध्यक्ष भी रहीं। लेकिन षीघ्र ही नमक सत्याग्रह के बाद गांधीजी की गिरफ्तारी के बाद उन्होंने अपने पद त्याग दिया तथा भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान वो काफी सक्रिय रहीं। भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान महाराष्ट्र के अष्टी तथा चिमूर में आदिवासियों के साथ किये गए सरकार के दमन के विरूद्ध उन्होने आवाज उठाई। इसेक अलावा अष्टी तथा चिमूर में हुए विद्रोह में 25 लोगों को फांसी की सजा हुई थी जिन्हें उनके प्रयासों से बचाया जा सका।

सरोजिनी नायडूः— प्रारंभ से आजादी के संघर्ष में सक्रिय रहीं थीं। उन्होंने धरसाना नमक सत्याग्रह के दौरान गांधीजी व सभी अन्य नेताओं की गिरफ्तारी के बाद सत्याग्रहियों का नेतृत्व किया था। 3 दिसंबर, 1940 को विनाबा भावे के नेतृत्व में हुए व्यक्तिगत सत्याग्रह में हिस्सा लेने के कारण पुलिस ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया लेकिन स्वास्थ्य कारणें से उन्हें षीघ्र ही जेल से रिहा कर दिया गया। भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान गिरफ्तार हुए प्रमुख नेताओं में वो भी षामिल थीं। उन्हें पुणे के आगा खॉ महल में रखा गया था। 10 महीने के बाद जेल से वो रिहा हुई तथा फिर से राजनीति में सक्रिय हुईं। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद उन्हें उत्तर प्रदेष का राज्यपाल नियुक्त किया गया तथा मार्च 1949 तक वो इस पद पर बनी रहीं एवं अपने कार्यकाल के दौरान ही उनकी मृत्यं हो गई। भारत में फैले प्लेग महामारी के दौरान लोगों की सेवा करने के लिए भारत सरकार ने कैसर–ए–हिंद की उपाधी दी थी जिसे उन्होंने जलियॉवाला बाग हत्याकांड के बाद वापस कर दिया था। सरोजिनी नायडू भारत में हिंदू–मुसलमान एकता की प्रबल समर्थक थीं और उन्हें उनकी कविताओं के लिए 'भारत की बुलबुल' कहा जाता है।

कमलादेवी चट्टोपाध्यायः— नमक सत्याग्रह तथा सविनय अवज्ञा आंदोलन से ही राजनीति में सक्रिय रहीं थीं। उसके बाद वो लगातार स्वतंत्रता संघर्ष के लिए होने वाले आंदोलनों में भागीदारी देती रहीं। अपने राजनीतिक संघर्ष के दौरान उन्हें कई बार जेल जाना पड़ा । भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान उन्हें भी गिरफ्तार किया गया। जेल से छूटने के बाद वो अमेरिका गईं तथा वहां के लोगों को भारत में ब्रिटिष हुकूमत की सच्चाई के बारे में बताया। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद कमलादेवी चट्टोपाध्याय ने अपना समय भारत की कला, संस्कृति तथा दस्ताकारी के उत्थान में लगाया । वह सहकारी संगठनों की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई । उन्होंने राष्ट्रीय नाटय अकादमी संगीत नाटक अकादमी तथा भारतीय दस्ताकारी परिषद की स्थापना में अपना योगदान दिया। वर्ष 1955 में कला के क्षेत्र में योगदान के लिए उन्हें पदम भूषण से सम्मानित किया गया।

मीराबेनः— का वास्तविक नाम मेडलिन स्लेड था तथा वो ब्रिटेन के एक कुलीन परिवार से संबंधित थीं। मेडलिन ब्रिटिष नेवी ऑफिसर एडमंड स्लेड की बेटी थी । अपने फ्रांस प्रवास के दौरान जब वो फ्रेंच लेखक रोमन रोलैंड से मिलीं और महात्मा गांधी पर लिखी गई उनकी पुस्तक से वह अत्यंत प्रभावित हुईं । तभी उन्हेंने भारत आने का निष्चय किया । वर्ष 1925 में वह भारत पहुॅची और साबरमती आश्रम में रहने लगीं । गांधीजी ने उन्हें अपनी बेटी माना और मीराबेन नाम दिया । तब से वह गांधीजी की सहयोगी क रूप में हमेषा उनके साथ रहने लगीं। वर्ष 1931 में वह गांधीजी के साथ दूसरे गोलमेज सम्मेलन में लंदन गयी थी । वह गांधीजी के विचारों को इंग्लैंड, अमेरिका, फ्रांस, जर्मनी तथा स्विट्जरलैंड में स्थित समाचार पत्रों को भेजती थी। सरकार ने उन्हें ऐसा करने से रोका लेकिन वो ऐसा करती रहीं। लंदन से वापस भारत आने के बाद वह खादी के प्रचार में लग गयी तथा इसके लिए पूरे देष कर या.त्रा की । यात्रा से वापस आने के बाद सरकार ने उन्हें मुंबई में प्रवेष करने से मना कर दिया था लेकिन इसके बावजूद वह वापस गयीं तथा अपनी गिरफ्तारी दी। भारत छोड़ों आंदोलन के दौरान मीराबेन को भी गांधीजी के साथ गिरफ्तार किया गया था और उन्हें आगा खॉ महल में भेज दिया गया जहां वो 21 महीने तक रही । स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद वो उत्तर प्रदेष सरकार की 'ग्रो मोर फूड' अभियान की सलाहकार रही। उन्होंने ऋषिकेष में एक आश्रम की स्थापना की तथा जीवन के अंतिम समय तक वे वहीं रही। इस तरह मीराबेन ने अपना पूर्ण जीवन भारत की सेवा में अर्पित किया तथा गांधीजी के संदेषों का प्रचार करती रही।

ऊषा मेहताः— भारत छोड़ो आंदोलन के प्रारंभ होने के बाद जब सभी मुख्य कांग्रेसी नेता गिरफ्तार कर लिए गए तब जिन लोगों ने गुप्त तरीके से आंदोलन को चलाया उनमें से ऊषा महेता प्रमुख नाम है। कांग्रेस रेडियो के माध्यम से ऊषा मेहता ने भारत छोड़ो आंदोलन में अभूतपूर्व भूमिका निभाई। कांग्रेस के कुछ सदस्यों ने मिलकर भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान होने वाली सभी घटनाओं को जनता तक कांग्रेस रेडियो के माध्यम से पहुँचाया। इन सदस्यों में ऊषा मेहता के अलावा विट्ठलदास, चंद्रकांत झावेरी, बाबूभाई ठक्कर और षिकागो रेडियो, मुंबई के टेक्निषियन नानक मोटवानी षामिल थे। इस रेडियो का प्रसारण मुंबई में विभिन्न स्थानों पर छिपाकर किया जाता था तथा प्रत्येक अगले दिन का प्रसारण किसी दूसरे स्थान से होता था। वे कांग्रेस रेडियो के नाम से प्रसारित किया गया तथा 3 महीने तक चलने के बाद ही इसे पुलिस पकड़ पाई। उनके द्वारा देष भर के विभिन्न स्थानो से आने वाली क्रांति की खबरें इस पर प्रसारित की जीती थी जिसकी वजह से स्थानीय स्तर पर आंदोलन कर रहे सत्याग्रहियों को होसला मिलता था।

सुचेता कृपलानी:— का राजनीतिक जीवन तब प्रारंभ होता है जब वह काषी हिंदू विष्वविधालय में इतिहास की लेक्चरर थी। वर्ष 1936 में कांग्रेस के वरिष्ठ नेता आचार्य जे. बी. कृपलानी से उनका विवाह हुआ। उसके बाद वो सक्रिय राजनीति में भाग लेने लगी और अपनी लेक्चरर की नौकरी छोड़ दी। उन्होंने आचार्य विनोबा भावे के नेतृत्व मे व्यक्तिगत सत्याग्रह में हिस्सा लिया और जेल गईं। जेल से निकलने के बाद वो भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान वो भूमिगत होकर प्रचार प्रसार करती रहीं। इस कार्य के दौरान उन्हें कइ मुष्किलों का सामना करना पड़ा किंतु वह पुलिस से बचकर निकलती रहीं। वर्ष 1943 में जब कांग्रेस के प्रचार तथा उसमें लोगों को जोड़ने के लिए लगातार प्रयास किये। भारत विभाजन के समय वो गांधीजी के साथ मिलकर दंगे से प्रभावित क्षेत्रों में जा रहीं थी। वह उतर प्रदेष की विधानसभा में सदस्य तथा बाद में लोकसभा की सदस्य भी रही। वर्ष 1963 में वह उत्तर प्रदेष की मुख्यमंत्री बनी और वह भारत की पहली महिला मुख्यमंत्री थी।

अरूणा आसफ अलीः— नमक सत्याग्रह के दिनों से ही राजनैतिक रूप से सक्रिय रहीं थी लेकिन उनकी पहचान 9 अगस्त, 1942 को मुंबई के ग्वालियर टैंक मैदान में बनी जब सभी नेताओं की गिरफ्तारी के बाद उन्होंने राष्ट्रीय ध्वजारोहण समोराह का नेतृत्व किया। उस समय बहुत बड़ी संख्या में भीड़ एकत्रित हुई थी और पुलिस ने उस पर नियंत्रण हेतु लाठी, ऑसू गैस तथा गोली चलायी फिर भी अरूणा ने उस सभा को सफलतापूर्वक नेतृत्व किया। भारत छोड़ो आंदोलन में अरूणा आसफ अली ने भी अन्य नेताओं की भांति ही भूमिगत तरीके से भागीदारी की और आंदोलन के प्रचार में अपना योगदान दिया। सितंबर 1942 में दिल्ली प्रषासन की तरफ से अरूणा आसफ अली को आत्मसमर्पण करने के लिए कहा गया था लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया। इस कारण उनका घर, संपति, गाड़ी आदि को ीलाम कर दिया गया। इसके बावजूद भी अरूणा आसफ अली आंदोलन के लिए प्रचार करती रहीं, पत्रिकाओं में लेख लिखती रही तथा लोगों से लगातार मिलती रही। उन्होंने राममनोहर लोहिया के साथ मिलकर 'इंकलाब' नामक मासिक पत्रिका का संपादन किया। इसके अलावा असंख्य महिला नेताओं व स्थानीय महिलाओं ने भारत छोड़ों आंदोलन में अपनी भागीदारी दी जिसकी वजह यह आंदोलन सभी पूर्ववर्ती आंदोलनों से व्यापक तथा प्रभावषाली साबित हुआ। इसने विष्व युद्ध समाप्त होने के बाद अंग्रेजों को भारत छोड़ो में भूमिका तैयार की।

बिहार के विभिन्न क्षेत्रों से 1942 के इस आंदोलन में शहीद होने वाली महिलाओं की संख्या अन्य सभी प्रान्तों से अधिक रही। उपलब्ध विवरण इस प्रकार है समस्तीपुर जिला के अंतर्गत गाँव उत्तरसाही, कल्याणपुर के शिवगोपाल दुसाध की पत्नी अकली देवी 15 सितम्बर 1942 को अपने गाँव में गोरे सैनिकों की गोली का शिकार हुई। गाँव बेला, रोसड़ा के श्री भूटो गोप की पुत्री कुमारी धतुरी देवी बेला में सरकारी विमान दुर्घटना के समय गोरे सैनिकों की गोली से भयंकर रूप से जख्मी हुई। उसी रात 2 सितम्बर 1942 को उसकी मौत हो गयी।

गाँव बेला, रोसड़ा के श्री भूटों गोप की पत्नी सोमवारिया देवी भी 2 सितम्बर 1942 को ही पुलिस की गोली से मौत हो गयी। गाँव बेला की ही थेथार तेली की पुत्री, कुमारी हुंकेरी उसी विमान दुर्घटना के समय गाँव पर सैनिक गश्त में गोली की शिकार हुई और उसकी भी उसी रात मृत्यु हो गयी। गाँव गोविंदपुर, के श्री नरसिंह गोप की पत्नी जिरियावती भी उनके गाँव में अंग्रेजी सेना की गश्त के समय गोली की शिकार हो गयी।

इन विवरणों से पता चलता है कि सामाजिक एवं शैक्षणिक दृष्टि से पिछड़े होने के बावजूद महिलाओं में कितनी जागरूकता थी। षहर एवं देहात की स्त्रियाँ भी आदम्य साहस के साथ मुकाबला कर रही थी। छुपे, अनजाने नाम न जाने कितनी ऐसी महिला स्वतंत्रता सेनानि हैं जिनका योगदान सराहनीय है परंतु उनका विवरण अप्राप्त है। वो इतिहास के पन्नो में गुमनाम दफन है परंतु हम आज भी उनको स्मरण करते हैं। मेरा षोध पत्र खास तौर पर वैसी महिलाओं के लिए एक श्रद्धांजलि है।

संदर्भ सूचिः—

1. डॉ. जटाषंकर झा : ए हिस्ट्री ऑफ दरभंगा राज, पटना, 1962
2. उषा बाला : भारत की वीरंगनाएँ, प्रविसूप्रम भारत सरकार, 2006
3. निष्तार खानकाही, डॉ. गिरिराज षरण अग्रवाल : नारी आज और कल, हिन्दी साहित्य निकेतन, बिजनौर
4. डॉ. मधु राठौर : पंचायती राज और महिला विकास पोइन्टर पब्लिषर्स, जयपुर
5. मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालय ;महिला बाल विकास विभागद्ध द्वारा तैयार फाइल से, 2006
6. डॉ. अवनीन्द्र कुमार : स्टडीज ऑफ द हिस्ट्री ऑफ मॉर्डन बिहार, पटना 2008
7. रात्नेष प्रसाद सिंह : बलिपंथी, जिला स्वतंत्रता संनानी संघ, समस्तीपुर,1946